Roll No. ..... 34 No of Printed Pages : 4

B.A. (Pt. I)
2007 - II

Hindi Lit. -II

B.A. (Part I) EXAMINATION, 2022

(Faculty of Arts)

[Also Common with subsidiary Paper of B.A. (Hons.) Part I]

(Three-Year Scheme of 10+2+3 Pattern)

HINDI LITERATURE
SECOND PAPER

(कहानी, नाटक एवं एकांकी)

Time Allowed: 1½ Hours

Maximum Marks: 100 **Minimum Marks: 36**

(1) No supplementary answer-book will be given to any candidate. Hence the candidates should write the answer precisely in the Main answer-book only.
किसी भी परीक्षार्थी को पूरक उत्तर–पुस्तिका नहीं दी जायेगी। अतः परीक्षार्थियों को चाहिये कि वे मुख्य उत्तर–पुस्तिका में ही समस्त प्रश्नों का उत्तर लिखें।

(2) All the parts of one question should be answered at the one place in the answer-book. One complete question should not be answered at different places in the answer book.
किसी भी एक प्रश्न के अंन्तर्गत पूछे गये विभिन्न प्रश्नों के उत्तर–पुस्तिका में अलग–अलग स्थानों पर हल करने के बजाय एक ही स्थान पर हल करें।

किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर दीजिये।
सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

https://www.msbuonline.com

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(i) जबरा शायद समझ रहा था कि स्वर्ग यहीं हो और हल्कू की पवित्र आत्मा में तो उस कुत्ते के प्रति घृणा की गंध तक न थी। अपने किसी अभिन्न मित्र या भाई को भी वह इतनी तत्परता से गले लगाता। वह अपनी दीनता से आहत न था। जिसने आज उसे इस दशा में पहुँचा दिया। नहीं, इस अनोखी मैत्री ने जैसे उसकी आत्मा के सब द्वार खोल दिए थे और उसका एक-एक अणु प्रकाश से चमक रहा था।

(ii) लड़ाई के समय चाँद निकल आया था। ऐसा चाँद, जिसके प्रकाश से संस्कृत कवियों का दिया हुआ 'क्षयी' नाम सार्थक होता है और हवा ऐसी चल रही थी जैसी कि बाणभट्ट की भाषा में 'दन्तवीणोपदेशाचार्य' कहलाती है। वजीरासिंह कह रहा था कि कैसे मन-मन भर फ्रांस की भूमि मेरे बूटों से चिपक रही थी। जब मैं दौड़ा-दौड़ा सूबेदार के पीछे गया था। सूबेदार लहना सिंह से सारा हाल सुन और कागजात पाकर उसकी तुरन्त बुद्धि को सराह रहे थे और कह रहे थे कि तू न होता तो आज सब मर जाते।

(iii) 'आखिर पाँच बजते-बजते तैयारी मुकम्मल होने लगी। कुर्सियाँ, मेज, तिपाइयाँ, नैपकिन फूल सब बरामदे में पहुँच गए। ड्रिंक का इन्तजाम बैठक में कर दिया गया। अब घर का फालतू सामान आलमारियों के पीछे और पलंगों के नीचे छिपाया जाने लगा। तभी शामनाथ के सामने सहसा एक अड़चन खड़ी हो गई माँ का क्या होगा?

(iv) इतना जल, इतनी शीतलता! हृदय की प्यास न बुझी। पी सकूँगी? नहीं। तो जैसे वेला से चोट खाकर सिन्धु चिल्ला उठता है, उसी के समान रौदन करूँ? या जलते हुए स्वर्ण गोलक सदृश अनन्त जल में डूब कर बुझ जाऊँ।

(v) मधु : (पहलू बदलकर) लेकिन मैं पूछती हूँ, इसमें दोष क्या है? जब हम खरीद सकते हैं तो क्यों न दस-दस तौलिए रखें। कल परमात्मा न करे हम इस योग्य न रहें तो मैं आपको दिखा दूँ कि किस तरह गरीबी में भी सफाई रखी जा सकती है - तौलिए न सही, खादी के अँगोछे सही-कुछ भी रखा जा सकता है। लेकिन जिस तौलिए से किसी दूसरे ने बदन पोंछा हो, उससे किस प्रकार कोई अपना शरीर पोंछ सकता है?

(vi) और मेरी आत्मा की आवाज का प्रमाण मैंने यह पाया कि भरतपुर से कहीं दूर आपके राज्य की सीमा पर ही आपके सैनिक हमारे लिए भोजन वस्त्र लेकर प्रतीक्षा कर रहे थे इतनी चिन्ता, पिता के अतिरिक्त और कौन कर सकता है? जब मैंने अपनी आँखों से, माता किशोरी को, घायल मराठा सैनिक की

https://www.msbuonline.com

निरन्तर, वात्सल्य के साथ देखभाल करते देखा, तो मुझे विश्वास हो गया कि इस कलिकाल में भी जगदम्बा भवानी, शरीर धारण करके आ सकती हैं।

(vii) चन्द्रगुप्त : निर्दोष? वह सब प्रकार से दोषी कही जानी चाहिए। गौतम ने अहल्या को शाप क्यों दिया? क्या अहल्या ने अपने सदाचार से अपने सौन्दर्य की रक्षा नहीं की थी? फिर क्यों उसने इन्द्र को नहीं पहचाना? शवी का सौभाग्य अप्सराओं को बाँटने वाले इन्द्र की लालसा का भी परिचय चाहिए? वैसे ही क्या अलका महाराज नन्द को नहीं पहचान सकी? क्या महाराज नन्द की आँखों में उसके अंगराग की अरुण रेखाऐं विद्युत बनकर चमक नहीं उठी? यशोवर्मन! तुम जानते हो आकाश की उल्का प्रकाश से ओत प्रोत रहती है किन्तु जब वह उदित होती है तो समस्त संसार में अमंगल की आशंका क्यों होती है?

(viii) रूपराम कटारा : श्री महाराज! जे जो कछु माया और काया ब्रज की बनी ऐ, सो सब महाराज की बुद्धि कौ चमत्कार ऐ। आजु हम अपने हीये की बात खोलिके अर्ज करें हैं कि हमारी आत्मा जे मानिके चलि रही ऐ कि आपकी काया के सहारे भगवान गोर्धननाथ अपनी लीला रचि रहे ऐं-आपनै हमकूं संग लैकैं हमारौ जीवन सुकारथ करि दीनौं-हमें तौ आप अपने मनसुखा समुझौ करौ। आपकौ हुकम हमकूँ भगवान को आदेस ऐ-आप हुकुम करौ, हम वाकौ पालन करें।

2. चित्रामुद्गल कृत कहानी 'भूख' की कथावस्तु का उल्लेख करते हुए इसकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।

3. 'पूस की रात' केवल हल्कू की कहानी न होकर सम्पूर्ण भारत के गरीब किसानों के उत्पीड़न और शोषण की कहानी है।' तर्कसंगत ढंग से इस कथन की पुष्टि कीजिए। https://www.msbuonline.com

4. 'कौमुदी महोत्सव' एकांकी के शीर्षक की सार्थकता का उल्लेख करते हुए इस एकांकी की पात्र-योजना पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

5. 'वीर शिरोमणि महाराज सूरजमल' नाट्यकृति प्रेरणास्पद तो है ही, इसमें साहित्य के भी विशिष्ट तत्व है।' इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिए।

6. उपेन्द्रनाथ अश्क कृत 'तौलिये' एकांकी की तात्विक समीक्षा कीजिए।

7. 'अवाम के आदमी रहो, देश के सिपाही रहो। स्वाभिमान एवं गौरव से जिओ। मर्यादा की लीक पर चलो।' इस कथन को स्पष्ट करते हुए 'वीर शिरोमणि महाराज सूरजमल' नाटक की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।

8. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए :

(क) 'उसने कहा था' कहानी के लहना सिंह का चरित्र-चित्रण।

(ख) 'चीफ की दावत' कहानी का प्रतिपाद्य।

(ग) 'गदल' कहानी की भाषा शैली।

(घ) 'भोर का तारा' एकांकी में परिवेश (वातावरण) चित्रण।

(ङ) 'वीर शिरोमणि महाराज सूरजमल' नाटक की भाषा-शैली।

*****

https://www.msbuonline.com